

## « La gloire de Dieu en Jésus-Christ » (2 Corinthiens 4.1-7)

Résumé : Être chrétien, c'est CHÉRIR la gloire de Dieu en Jésus-Christ.

### 1. La lumière : Adore ! (v.1-4)

- C'est quoi sa gloire ?

---

---

---

---

---

- C'est quoi CHÉRIR sa gloire ?

---

---

---

---

---

- Où voit-on sa gloire le plus clairement ?

---

---

---

---

---

### 2. L'interrupteur : Prêche ! (v.5)

---

---

---

---

---

### 3. L'électricité : Crois ! (v.6-7)

---

---

---

---

---